ENT DEPARTMENT GSVM MEDICAL COLLEGE

(I) PATIENT & EMERGENCY CARE INITIATIVES

- EMERGENCY TREATMENT OF PATIENTS REGARDING ENT COMPLAINTS (RTA, FOREIGN BODY NOSE, FOREIGN BODY COIN, EPISTAXIS, LARYNGOTRACHEAL TRAUMA ETC.).
- IF IMMEDIATE SURGERY IS REQUIRED PATIENTS ADMITTED AND TRANSFER INTO OT FOR SURGERY.

(II) SIGNIFICANT ACHIEVEMENTS THAT NEED MENTION

- UG & PG TEACHING AS PER NMC CURRICULAM NORMS.
- STRENGTHNED MANPOWER FOR OPD /IPD
- INCREASE IN NUMBER OF PATIENTS IN OPD/IPD/OT CASES
- PERFORM MAJOR SURGERIES LIKE ENDOSCOPIC ANGIOFIBROMA, MRM THYROID, PAROTID, FESS , **MAXILLECTOMY AND SKULL BASE SURGERIES IN COLLABORATION WITH SURGERY AND NEUROSURGERY DEPARTMENT.**
- APPLIED FOR INCREMENT IN PG SEATS FROM **6 TO 10**
- PARTICIPATION AND PRESENTATION BY FACULTY MEMBERS OF DEPT OF ENT IN STATE AND NATIONAL CONFERENCES.

(III) INSTALLATION OF OT TABLE, ANAESTHESIA WORK STATION, OT LIGHTS & MICROSCOPE IN FY 2024-25 IN ENT OT.

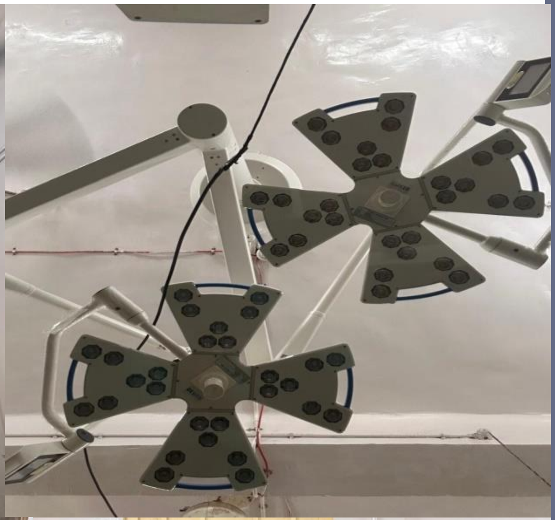

(III) INTRA AND EXTRA MURAL PROJECTS/ACTIVITIES

- ***Strategic implementation of artificial intelligence in diagnosing laryngeal disease –under ICMR thesis promotional FUNDED PROJECT.***

AWARDS:

- **2nd Prize Poster Competition -41st UPAOICON Banaras**
- **2nd and 3rd Prize PG QUIZ – 41st UPAOICON Banaras**

GUEST LECTURES ORGANISED BY DEPT OF ENT:

1. ANATOMY OF PARANASAL SINUS AND MANAGEMENT OF PARANASAL SINUS TUMOURS DR AMIT KESHARI , PROFESSOR, DEPT OF NEUROTOLOGY , SGPGI , LUCKNOW
2. NECK DISSECTION BY DR ABHIMANYU KADAPATHARI, CONSULTANT APOLLOMEDICS SUPERSPECIALITY, LUCKNOW

(B) LIST OF PUBLICATIONS DEPARTMENT OF E.N.T GSVM MEDICAL COLLEGE KANPUR

- Vertika Tewari, Mohamed Tabrez , Harendra Kumar Gautam , Azmi Zehra , Priyali Singh ,Fat Graft Myringoplasty versus Chemical cauterisation in small tympanic membrane perforation : A comparative study (2024) .Bengal Journal of Otolaryngology and Head Neck Surgery,32(1),15-21 .

- Rizwan QS, Kanaujia SK, Srivastava A, Kanawjia P, Singh P, Singh S, Lal P, Singh AN. Olfactory Sensitivity in Covid 19 Infection Recovered Subjects. Indian J Otolaryngol Head Neck Surg. 2024 Apr;76(2):1575-1579.

- Kumar, H., Rizwan, Q.S., Gupta, M. et al. Giant Pleomorphic Adenoma of Submandibular Gland. Indian J Otolaryngol Head Neck Surg 76, 1361–1364 (2024).

- Saxena NS, Singh K, Kesharwani V, Gupta M, Rizwan QS, Kumar T. A rare case of meningothelial meningioma in middle ear and mastoid. Indian J Otolaryngol Head Neck Surg. 2024 Feb.
- Kumar, P., Kanaujia, S.K., Srivastava, A. et al. ti ASSOCIATION BETWEEN SENSORINEURAL HEARING LOSS AND BENIGN THYROID NODULES: A CLINICAL STUDY Dec (2024) .Indian Journal Of Applied Research ,14(12)
- Kumar H, Rizwan QS, Gupta M, Kumar T. Surgical Dilemma in Approaching Parapharyngeal Space Pleomorphic adenoma- Transcervical or Transoral Route - A Case Report. Indian J Otolaryngol Head Neck Surg. 2024 Jun.
- Dwivedi, P., Kanaujia, S.K., Srivastava, A. et al. Audiological Profile in Patients of Chronic Stable Angina with Hearing Loss.Indian J Otolaryngol Head Neck Surg 77, 741–748 (2025).
- Agrawal, P., Kumar Kanaujia, S., Srivastava, A. et al.Assessment of the Audiological Profile and Related Risk Factors for Sensorineural Hearing Loss in Children with Speech and Language Delay. Indian J Otolaryngol Head Neck Surg 77, 207–215 (2025).

- **Outdoor activities/camps undertaken:**

HEALTH CAMP CONDUCTED BY ENT DEPARTMENT,

G.S.V.M. MEDICAL COLLEGE, KANPUR

1. SCHOOL
2. FACTORY (Industrial Health Camp)

(V) Clinical Workload Dept of E.N.T (2024-25)

Year	Number of Patients		Major Operations	Minor Operations	Total Operations
	OPD	IPD			
2024-2025	68810	2080	711	6633	7344

(VI) GOALS/TARGETS YOU WANT TO SET FOR FY-2025-26

- TO ORGANISE 43RD ANNUAL UP-AOI CONFERENCE 2026
- TO UPGRADE THE ENT WARD , ENT OT AND DEPARTMENTAL LIBRARY .
- TO START THE LATERAL SKULL BASE AND NAVIGATIONAL SURGERIES IN THE DEPARTMENT.
- TO INCREASE MORE RESEARCH ACTIVITY AND PROJECTS.

ENT DEPARTMENT AND PRINT MEDIA

हिन्दुस्तान

सिर की त्वचा से बनाया जबड़ा, पांच घंटे की सर्जरी से बचाई जान

उपलब्धि

कानपुर, वरिष्ठ संवाददाता। शहर के सबसे बड़े अस्पताल हैलट में एक और जटिल सर्जरी हुई। 63 वर्षीय बुजुर्ग के ऊपरी जबड़े में कैंसर का इलाज पांच घंटे की सर्जरी से किया। खास यह है कि सिर की त्वचा से जबड़ा बनाया गया। बुजुर्ग की हालत अब ठीक है। प्राचार्य डॉ संजय काला के नेतृत्व में यह सर्जरी हुई। 15 दिन पहले एक बुजुर्ग ऊपरी जबड़े में तकलीफ की शिकायत लेकर आए। ऊपरी जबड़े में कैंसर की पुष्टि हुई।

प्राचार्य के मुताबिक, जबड़े के कैंसर में आमतौर पर कीमो व रेडियोथेरेपी ज्यादा कारगर नहीं होती है। इसलिए सर्जरी को सही माना। सिर की त्वचा से जबड़ा बनाया। कैंसर वाले हिस्से को हटाया गया। डॉ प्रेमशंकर, डॉ आशीष चौधरी, डॉ हरेंद्र कुमार, डॉ गौरव वर्मा, डॉ विशाल उपाध्याय शामिल रहे।

- हैलट में एक बार फिर जटिल सर्जरी करके डॉक्टरों ने दिखाई काबिलियत
- बुजुर्ग की हालत अब ठीक है उनकी पहले भी की जा चुकी है सर्जरी

हैलट अस्पताल में बुजुर्ग की सर्जरी करने वाली डॉक्टरों की टीम।

छह माह पहले निचले जबड़े में हुआ था कैंसर

बताया गया कि बुजुर्ग को छह माह पहले निचले जबड़े में कैंसर हुआ था। जबड़े में जो कैंसर हुआ, वह आमतौर पर मांसपेशियों में होता है। डॉ संजय काला व उनकी टीम ने 11 सितंबर 2023 को भी निचले जबड़े का ऑपरेशन किया था। उस वक्त छाती की त्वचा से निचला जबड़ा बनाया था। ऑपरेशन के बाद वह स्वस्थ हो गए थे।

जटिल सर्जरी की चुनौतियां

- जिस जगह का पहले ऑपरेशन हुआ वहां दोबारा सर्जरी बेहद कठिन
- मरीज का मुंह पूरी तरह नहीं खुल रहा था
- जबड़े को शरीर के किस हिस्से की त्वचा से बनाना

खतरनाक गैसों में सल्फर डाईऑक्साइड की बढ़ी मात्रा कर रही परेशान, सांसें रोक रहीं धूल-धुएं के साथ जहरीली गैसें

आफत : अचानक छह गुना बढ़ गया शहर में प्रदूषण

प्रदूषण का प्रकोप

कानपुर, वरिष्ठ संवाददाता। वायु प्रदूषण बेकाबू है। शहर में मानक से छह गुना अधिक प्रदूषण हो गया है। हवा में धूल-धुआं के कणों के साथ जहरीली गैसें भी घुल रही हैं। तमाम कोशिशों के बावजूद धूल-धुएं के कणों की अधिकतम संख्या 363 माइक्रोन प्रति घन मीटर पर पहुंच गई। आधी रात नेहरू नगर का एयर क्वालिटी इंडेक्स (एक्यूआई) 232 पर पहुंच गया है।

दिन में उत्तर पश्चिमी हवाओं का जोर कम रहा और उत्तर पूर्वी हवाएं चलने लगीं। इसका असर यह हुआ कि दिल्ली और आसपास की ओर से आने वाले वायु प्रदूषण की रफ्तार कुछ धीमी हो गई। स्थानीय सेंटरों पर भी मॉनिटरिंग बीच-बीच थमती रही। ऐसे में शहर का ओवरऑल एक्यूआई 239 से सीधे 153 पर आ गया।

यहां की तस्वीर बड़ी भयावह रही: नेहरू नगर सेंटर पर रात में प्रदूषण चरम पर रहा। गुरुवार को यहां रात 12 बजे एक्यूआई 232, 01 बजे 228, 03 बजे 221, सुबह 06 बजे 210, 09 बजे 217 और दोपहर 12 बजे 212 शाम छह बजे एक्यूआई 190 पर पहुंच गया। एक्यूआई 50 या इससे नीचे ही होनी चाहिए। पर शहर के बीच इसकी मात्रा छह गुना अधिक तक पहुंच गई। नहीं रहतीं हैं।

धूल-धुएं के कण छह गुना

गुरुवार को कैंट स्थित बनिया बाजार में सड़क पर पड़े कूड़े पर आग लगा दी गई।

इन बातों पर ध्यान जरूर दें, नहीं तो होंगे परेशान

- घर से निकलें तो मास्क जरूर लगाएं
- प्रदूषण अधिक लगे तो गीला मास्क लगाएं
- आंख और नाक को पानी से साफ करते रहें
- गुड़ आदि का सेवन करें जिससे असर घटेगा
- प्रदूषण अधिक होने पर मॉर्निंग व ईवनिंग वॉक बंद कर दें

नवंबर 24	एक्यूआई
16	134
17	206
18	133
19	237
20	239
21	153

इस तरह गैसें करती हैं लोगों को प्रभावित

कार्बन मोनोऑक्साइड : शरीर में जाकर ऑक्सीजन ट्रांसपोर्ट सिस्टम प्रभावित करती है।
नाइट्रोजन डाइऑक्साइड : खांसी, सांस लेने में कठिनाई, वायु मार्ग में जलन, हृदय पर प्रभाव
ओजोन : स्किन को प्रभावित करती है। कैंसर तक संभव। हृदय को भी प्रभावित करती है
सल्फर डाइऑक्साइड : आंखों और गले में जलन, नर्वस सिस्टम प्रभावित होता है

डॉक्टर की सलाह

"धूल-धुंध का नाक, गले पर असर पड़ता है। एलर्जी होने का खतरा बढ़ जाता है। ज्यादा समय धूल-धुंध में रहने से सूखी खांसी, आवाज में बदलाव व दर्द की शिकायतें बढ़ती हैं। बाहर जाएं तो मास्क जरूर पहनें।"
– डॉ हरेंद्र कुमार, प्रोफेसर, ईएनटी, मेडिकल कॉलेज

"धूल-धुंध का सीधा असर फेफड़ों में पड़ रहा है। खासकर उन मरीजों को खास सावधानी की जरूरत है, जिन्हें पहले से ही समस्या है। अगर सांस लेने में दिक्कत है तो तुरंत अपने डॉक्टर से दवा में बदलाव कराएं।"
–डॉ आनंद कुमार, प्रोफेसर, चेस्ट हॉस्पिटल

हवा की दिशा बदली फिर भी सर्वाधिक सर्द रही रात

कानपुर, वरिष्ठ संवाददाता। उत्तर पश्चिमी से उत्तर पूर्वी हवाएं होते ही एक बार फिर लगातार गिरता पारा फिर ठहर गया है। इसने तेज बर्फीली हवाओं पर विराम लगा दिया है। इसके बावजूद दिन में जब भी उत्तर पश्चिमी हवाएं चलीं तो वह सर्दी का अहसास बढ़ा गईं। मुजफ्फरनगर के बाद कानपुर की रात प्रदेश में सर्वाधिक सर्द रही। यहां न्यूनतम पारा 10.8 डिग्री रहा।

नवंबर में उत्तर पूर्वी हवाओं ने लगातार सर्दी में बाधा पैदा की है। यह सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है। एक सप्ताह से चल रहीं उत्तर पश्चिम तेज हवाओं के कारण न सिर्फ सर्दी बढ़ गई थी बल्कि तापमान में भी गिरावट दर्ज होने लगी थी। गुरुवार को हवा का रुख फिर बदल गया। ज्यादातर समय फिर उत्तर पूर्वी हवाएं चलीं जिसने सर्दी को थामने की कोशिश की।

तापमान सामान्य से नीचे रहा : न्यूनतम पारा लगातार दूसरे दिन गुरुवार को सामान्य से नीचे रहा। रात का पारा 10.2 से बढ़कर 10.8 डिग्री हो गया लेकिन यह भी सामान्य से 02.1 डिग्री रहा। अधिकतम तापमान 25.2 से 26.4 डिग्री सेल्सियस हो गया। इसके बावजूद यह सामान्य से 1.2 डिग्री कम रहा। पूरे माह में बुधवार के बाद

हवा की रफ्तार थमी

वातावरण में नमी का प्रतिशत अधिकतम 91 तक पहुंच गया। न्यूनतम प्रतिशत भी 48 तक पहुंचा। पर हवा की रफ्तार सुस्त रही। हवा की गति 04-05 किमी प्रति घंटा रही। उत्तर पूर्वी हवा होने के कारण दिन में बुधवार के मुकाबले सर्दी का अहसास अपेक्षाकृत कुछ कम रहा।

उथल-पुथल बनी रहेगी

मौसम विशेषज्ञ डॉ. एसएन सुनील पांडेय ने बताया कि अरब सागर के अलावा पाकिस्तान और बांग्लादेश के क्षेत्रों में हो रही मौसमी उथल पुथल का असर 23 नवंबर या इसके बाद भी जारी रहेगा। इससे हवा की दिशा पर भी असर पड़ेगा। कभी बेहद सर्द तो कभी राहत देने वाली सर्दी रहेगी। चक्रवाती स्थितियां मौसम पर प्रतिकूल असर डाल सकती हैं।

हकलाहट जागरूकता दिवस • जागरूकता ही सबसे सफल इलाज, टोका-टाकी से बिगड़ सकती है बात

सकारात्मक रहिए, धीरे-धीरे दूर हो जाएगा बच्चे का हकलाना

अंकुश शुक्ल • जागरण

कानपुर : अगर आपका बच्चा बोलने में हकलाता है, तो इसमें परेशान होने की बात नहीं है। सही समय पर आपके छोटे से प्रयास से बच्चे के जीवन को संवारा जा सकता है। कई बच्चों को अक्सर बोलने में कठिनाई महसूस होती है। बोलने में असहजता, चिंता और डर इसका बड़ा कारण है। हकलाना एक विकार है जो आपके बोलने के तरीके की लय और प्रवाह को प्रभावित करता है। यह विकार आपके बोलने के तरीके को बाधित करता है। बोलने में रुकावटें या सहजता से बात करने में कई प्रकार की समस्याएं पैदा होती हैं। हालांकि, पांच प्रतिशत बच्चों में जन्म के समय ऐसा दोष होता है, जो 10 से 12 वर्ष की उम्र में स्वतः ठीक हो जाता है। एक प्रतिशत बच्चों का साइको और स्पीच थेरेपी की मदद से इलाज किया जाता है।

5% बच्चों में होती हकलाने की समस्या

10 से 12 वर्ष की आयु में स्वतः ठीक हो जाती परेशानी

जीएसवीएम मेडिकल कालेज के नाक, कान और गला रोग विशेषज्ञ हरेंद्र कुमार बताते हैं कि अभिभावकों का थोड़ा सकारात्मक रवैया रहे और इसको लेकर बच्चों को टोका-टाकी न करें तो यह समस्या बच्चों में जल्दी दूर हो जाती है।

डा. हरेंद्र कुमार के अनुसार, बच्चों में हकलाने की समस्या के मुख्य तीन प्रकार होते हैं। साइकोलाजिकल, पैदायशी और जेनेटिक। ज्यादातर मामलों में बच्चों के गले में बोलने की मांसपेशियों का मस्तिष्क के साथ जुड़ाव ठीक से नहीं होता है। इसके चलते बच्चे बोलने में हकलाते हैं। बचपन में हकलाना न्यूरोडेवलपमेंटल विकार है, जबकि लगातार हकलाना विकासात्मक विकार है। वहीं, जेनेटिक हकलाना मस्तिष्क को प्रभावित करने वाली बीमारी या चोट के कारण विकसित होता है, जिन्हें साइको और स्पीच थेरेपी करने की सलाह दी जाती है।

विकार है हकलाना, जो बोलने के लय और प्रवाह को करता है बाधित, स्पीच थेरेपी से भी संभव है इसका इलाज

हकलाकर बोलने वालों में मिलते ये लक्षण

- ध्वनियों या अक्षरों को दोहराना।
- कुछ अक्षरों में अटक जाना।
- बोलते समय अधिक समय तक अटकना।
- बोलने में बार-बार रुकावट।
- शब्द स्विचिंग।
- अत्यधिक तनाव।
- एकल-अक्षर वाले शब्दों को दोहराना।

हकलाने के अन्य कारण

- पारिवारिक इतिहास : यदि आपका कोई प्रथम श्रेणी का रिश्तेदार (माता-पिता या भाई-बहन) हकलाता है, तो आपके हकलाने की संभावना तीन गुणा अधिक है।
- आनुवंशिकी : डीएनए उत्परिवर्तन हकलाने में योगदान दे सकते हैं। आनुवंशिकी भी इस बात को प्रभावित करती है कि समय के साथ यह स्थिति सुधरती है या खत्म हो जाती है।
- मस्तिष्क की संरचना में अंतर : हकलाने वाले लोगों के मस्तिष्क के कुछ क्षेत्रों में अंतर होने की संभावना अधिक होती है। ये आमतौर पर वे क्षेत्र होते हैं जो बोलने की मांसपेशियों या मांसपेशियों के समन्वय को नियंत्रित करते हैं।

स्वास्थ्य | मेडिकल कॉलेज, उर्सला, केपीएम में पहुंचे मरीजों की रिपोर्ट, जुकाम से नाक व कान के बीच संक्रमण हो रहा

बहरेपन की दहलीज तक पहुंचा रहा वायरल

आशीष दीक्षित

कानपुर। माल रोड निवासी 20 वर्षीय युवक को 20 दिन पहले वायरल जुकाम ने दबोचा। दस दिन में राहत मिली पर तकलीफ कान तक पहुंच गई। तीन दिन से सुनने में भी दिक्कत होने लगी। इसी तरह शारदा नगर के 45 वर्षीय खाद कारोबारी को कई दिन से कान में दर्द है। डॉक्टरों ने वायरल जुकाम का आफ्टर इफेक्ट बताया है। जुकाम से उनकी नाक, मुंह, कान को जोड़ने वाली ट्यूब जाम मिली। इसकी अनदेखी बहरेपन की दहलीज तक पहुंचा रही।

जीएसवीएम मेडिकल कॉलेज, उर्सला, केपीएम में ऐसे मरीजों के आंकड़े वायरल जुकाम की भयावहता बता रहे हैं। इन अस्पतालों में एक माह में वायरल जुकाम की चपेट में आने के बाद 422 मरीज कान का इलाज कराने पहुंचे। 65 फीसदी 18 से 45 साल के हैं। दर्द के साथ कान में पस, आंशिक बहरापन की तकलीफ हुई।

नाक, मुंह और कान को जोड़ने वाली नली में संक्रमण: ईएनटी विशेषज्ञों के अनुसार, लगातार जुकाम के कारण नाक, मुंह और कान के बीच की नली में संक्रमण से पर्दे के पीछे पस बनने लगता है। कान में दर्द, अचानक कान सुन्न होने के लक्षण मिल रहे। लगातार व बार-बार जुकाम से कान के पर्दे पर सीधा असर पड़ता है। यह पर्दे के साथ हड्डी को कमजोर करता है।

केस 1 माल रोड निवासी 20 वर्षीय युवक को 20 दिन पहले वायरल जुकाम ने दबोचा। दस दिन में वायरल से तो राहत मिली पर धीरे-धीरे तकलीफ कान तक पहुंच गई। तीन दिन से सुनने में भी दिक्कत होने लगी।

केस 2 शारदा नगर निवासी 45 वर्षीय खाद कारोबारी को कई दिन से कान में दर्द, झनझनाहट की तकलीफ रही। डॉक्टरों ने इसे वायरल जुकाम के बाद का असर माना। जुकाम के कारण नाक, मुंह, कान को जोड़ने वाली ट्यूब जाम मिली।

वायरल जुकाम की चपेट में आने के बाद कान की तकलीफ तेजी से बढ़ी है। नाक, मुंह और फिर कान को जोड़ने वाली नस ब्लॉक होने के कारण समस्या हो रही है। रोजाना दस मरीज आ रहे हैं।
डॉ अमृता श्रीवास्तव, ईएनटी चिकित्सक, मेडिकल कॉलेज

वायरल जुकाम का असर कान पर पड़ रहा है। पिछले एक माह के दौरान ऐसे मरीजों की संख्या तेजी से बढ़ी है। संक्रमण से मवाद भी बनने से स्थिति और खराब होती है। इलाज में देरी ठीक नहीं है।
डॉ आरबी जायसवाल, वरिष्ठ चिकित्सक, केपीएम

स्वास्थ्य

एनआईटी खड़गपुर के साथ जीएसवीएम ने तैयार किया एआई टूल, आवाज से कोसों दूर के रोगी की बीमारी का पता लगेगा

गले का मिजाज बता देगी आपकी आवाज

माई सिटी रिपोर्टर

कानपुर। रोगी की आवाज सुनते ही आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआई) टूल बता देता है, कि गले में कौन सी बीमारी है। वोकल कॉर्ड और गले के साउंड बॉक्स की छोटी से छोटी गांठ का मिजाज यह पहचान लेता है। इससे मर्ज की शुरुआत में ही रोगी को इलाज मिल जाता है।

टेली मेडिसिन विधि से इलाज के लिए यह एआई टूल वरदान है। कोसों दूर बैठे इंसान के साउंड सैंपल से ही रोग की पहचान हो जा रही है। एनआईटी खड़गपुर और जीएसवीएम मेडिकल कॉलेज के ईएनटी विभाग ने मिलकर यह टूल तैयार किया है।

एआई टूल से ईएनटी विभाग ने अभी तक 70 रोगियों की डायग्नोसिस बनाई है। एआई टूल की डायग्नोसिस को इंडोस्कोपिक और पैथोलाजिकल जांचों से क्रॉस चेक भी किया गया। इसमें एआई टूल की जांच को सटीक पाया गया। इसके आधार पर लेरिंजाइटिस; गले के साउंड बॉक्स की दिक्कत, गांठों आदि का इलाज किया गया। साउंड सैंपल लेने के लिए रोगी से कुछ वाक्य बोलने को कहा जाता है। वो जो जवाब देता है, उससे साउंड सैंपल तैयार किए जाते हैं। इन्हीं सैंपल से रोग की पहचान हो जाती है।

ईएनटी विभागाध्यक्ष एवं प्रोफेसर डॉ. एसके कनौजिया ने बताया कि एआई टूल सरीखी तकनीक से रोग की पहचान में मदद मिलती है। डायग्नोसिस सटीक होती है। डॉ. हरेंद्र की देखरेख में डॉ. नेहा चौधरी ने एआई टूल पर शोध किया है। डॉ. हरेंद्र ने बताया कि इससे टेली मेडिसिन से इलाज में आसानी हो जाएगी। इसमें आवाज सैंपल से जांच कर ली जाएगी। वोकल कॉर्ड की बीमारी किस स्थिति में है, यह भी पता लग जाएगा। उन्होंने बताया कि गले की बीमारी होने पर आवाज की फ्रीक्वेंसी बता देती है कि कुछ दिक्कत है।

डॉ. अमृता श्रीवास्तव और डॉ. नेहा ने बताया कि एआई टूल का सॉफ्टवेयर एक स्पेक्टोग्राम बना देता है। इसी से बीमारी की स्थिति के बारे में पता लग जाता है। इसके अलावा गांठों के नेचर के संबंध में भी पता चल जाता है। उन्होंने बताया कि गले से संबंधित दिक्कतें बढ़ रही हैं। बहुत से रोगी दूर-दराज इलाकों के होते हैं, जिन्हें अस्पताल आने-जाने में दिक्कत होती है। टेली कंसलटेशन से कोसों दूर बैठे रोगी की आवाज का सैंपल लेकर डायग्नोसिस बन जाती है।

70 रोगियों की डायग्नोसिस बनाई है एआई टूल से ईएनटी विभाग ने अभी तक

एआई टूल शोध

आईसीएमआर में चयनित

- राष्ट्रीय स्तर पर एआई टूल शोध को इंडियन काउंसिल आफ मेडिकल रिसर्च (आईसीएमआर) के एमडी, एमएस थेसिस सपोर्ट प्रोग्राम में चयनित किया गया है। आईसीएमआर में चयन होने पर शोध के लिए फंड मिलेगा। टूल के लिए नेशनल इंस्टीट्यूट आफ टेक्नोलॉजी, खड़गपुर ने सॉफ्टवेयर तैयार किया है।

खतरनाक गैसों में सल्फर डाईऑक्साइड की बढ़ी मात्रा कर रही परेशान, सांसें रोक रहीं धूल-धुएं के साथ जहरीली गैसें

आफत : अचानक छह गुना बढ़ गया शहर में प्रदूषण

प्रदूषण का प्रकोप

कानपुर, वरिष्ठ संवाददाता। वायु प्रदूषण बेकाबू है। शहर में मानक से छह गुना अधिक प्रदूषण हो गया है। हवा में धूल-धुआं के कणों के साथ जहरीली गैसें भी घुल रही हैं। तमाम कोशिशों के बावजूद धूल-धुएं के कणों की अधिकतम संख्या 363 माइक्रोन प्रति घन मीटर पर पहुंच गई। आधी रात नेहरू नगर का एयर क्वालिटी इंडेक्स (एक्यूआई) 232 पर पहुंच गया है।

दिन में उत्तर पश्चिमी हवाओं का जोर कम रहा और उत्तर पूर्वी हवाएं चलने लगीं। इसका असर यह हुआ कि दिल्ली और आसपास की ओर से आने वाले वायु प्रदूषण की रफ्तार कुछ धीमी हो गई। स्थानीय सेंटरों पर भी मॉनिटरिंग बीच-बीच थमती रही। ऐसे में शहर का ओवरऑल एक्यूआई 239 से सीधे 153 पर आ गया।

यहां की तस्वीर बड़ी भयावह रही: नेहरू नगर सेंटर पर रात में प्रदूषण चरम पर रहा। गुरुवार को यहां रात 12 बजे एक्यूआई 232, 01 बजे 228, 03 बजे 221, सुबह 06 बजे 210, 09 बजे 217 और दोपहर 12 बजे 212 रहा। हवा की रफ्तार थमने और दिशा बदलने से एक्यूआई में कमी आ गई। शाम छह बजे एक्यूआई 190 पर पहुंच गया। एक्यूआई 50 या इससे नीचे ही स्वास्थ्य के लिए ठीक माना जाता है। 100 तक भी स्थितियां बहुत खराब नहीं रहतीं हैं।

धूल-धुएं के कण छह गुना अधिक : धूल-धुआं की मात्रा 60 माइक्रोन प्रति घन मीटर से अधिक नहीं होनी चाहिए। पर शहर के बीच इसकी मात्रा छह गुना अधिक तक पहुंच गई। नेहरू नगर सेंटर पर इसकी मात्रा 363 माइक्रोन प्रति घनमीटर तक पहुंच गई।

गुरुवार को कैंट स्थित बनिया बाजार में सड़क पर पड़े कूड़े पर आग लगा दी गई।

इस तरह गैसें करती हैं लोगों को प्रभावित

कार्बन मोनोऑक्साइड : शरीर में जाकर ऑक्सीजन ट्रांसपोर्ट सिस्टम प्रभावित करती है।

नाइट्रोजन डाइऑक्साइड : खांसी, सांस लेने में कठिनाई, वायु मार्ग में जलन, ह्रदय पर प्रभाव

ओजोन : स्किन को प्रभावित करती है। कैंसर तक संभव। ह्रदय को भी प्रभावित करती है

सल्फर डाइऑक्साइड : आंखों और गले में जलन, नर्वस सिस्टम प्रभावित होता है

इन बातों पर ध्यान जरूर दें, नहीं तो होंगे परेशान

- घर से निकलें तो मास्क जरूर लगाएं
- प्रदूषण अधिक लगे तो गीला मास्क लगाएं
- आंख और नाक को पानी से साफ करते रहें
- गुड़ आदि का सेवन करें जिससे असर घटेगा
- प्रदूषण अधिक होने पर मॉर्निंग व ईवनिंग वॉक बंद कर दें

नवंबर 24	एक्यूआई
16	134
17	206
18	133
19	237
20	239
21	153

डॉक्टर की सलाह

"धूल-धुंध का नाक, गले पर असर पड़ता है। एलर्जी होने का खतरा बढ़ जाता है। ज्यादा समय धूल-धुंध में रहने से सूखी खांसी, आवाज में बदलाव व दर्द की शिकायतें बढ़ती हैं। बाहर जाएं तो मास्क जरूर पहनें।"
– डॉ हरेंद्र कुमार, प्रोफेसर, ईएनटी, मेडिकल कॉलेज

"धूल-धुंध का सीधा असर फेफड़ों में पड़ रहा है। खासकर उन मरीजों को खास सावधानी की जरूरत है, जिन्हें पहले से ही समस्या है। अगर सांस लेने में दिक्कत है तो तुरंत अपने डॉक्टर से दवा में बदलाव कराएं।"
-डॉ आनंद कुमार, प्रोफेसर, चेस्ट हॉस्पिटल

हवा की दिशा बदली फिर भी सर्वाधिक सर्द रही रात

कानपुर, वरिष्ठ संवाददाता। उत्तर पश्चिमी से उत्तर पूर्वी हवाएं होते ही एक बार फिर लगातार गिरता पारा फिर ठहर गया है। इसने तेज बर्फीली हवाओं पर विराम लगा दिया है। इसके बावजूद दिन में जब भी उत्तर पश्चिमी हवाएं चलीं तो वह सर्दी का अहसास बढ़ा गईं। मुजफ्फरनगर के बाद कानपुर की रात प्रदेश में सर्वाधिक सर्द रही। यहां न्यूनतम पारा 10.8 डिग्री रहा।

नवंबर में उत्तर पूर्वी हवाओं ने लगातार सर्दी में बाधा पैदा की है। यह सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है। एक सप्ताह से चल रहीं उत्तर पश्चिम तेज हवाओं के कारण न सिर्फ सर्दी बढ़ गई थी बल्कि तापमान में भी गिरावट दर्ज होने लगी थी। गुरुवार को हवा का रुख फिर बदल गया। ज्यादातर समय फिर उत्तर पूर्वी हवाएं चलीं जिसने सर्दी को थामने की कोशिश की।

तापमान सामान्य से नीचे रहा : न्यूनतम पारा लगातार दूसरे दिन गुरुवार को सामान्य से नीचे रहा। रात का पारा 10.2 से बढ़कर 10.8 डिग्री हो गया लेकिन यह भी सामान्य से 02.1 डिग्री कम है। इसी तरह दिन का तापमान भी लगातार दूसरे दिन सामान्य से कम रहा। अधिकतम तापमान 25.2 से 26.4 डिग्री सेल्सियस हो गया। इसके बावजूद यह सामान्य से 1.2 डिग्री कम रहा। पूरे माह में बुधवार के बाद गुरुवार को अधिकतम और न्यूनतम तापमान सामान्य से कम रहे हैं।

हवा की रफ्तार थमी

वातावरण में नमी का प्रतिशत अधिकतम 91 तक पहुंच गया। न्यूनतम प्रतिशत भी 48 तक पहुंचा। पर हवा की रफ्तार सुस्त रही। हवा की गति 04-05 किमी प्रति घंटा रही। उत्तर पूर्वी हवा होने के कारण दिन में बुधवार के मुकाबले सर्दी का अहसास अपेक्षाकृत कुछ कम रहा।

उथल-पुथल बनी रहेगी

मौसम विशेषज्ञ डॉ. एसएन सुनील पांडेय ने बताया कि अरब सागर के अलावा पाकिस्तान और बांग्लादेश के क्षेत्रों में हो रही मौसमी उथल पुथल का असर 23 नवंबर या इसके बाद भी जारी रहेगा। इससे हवा की दिशा पर भी असर पड़ेगा। कभी बेहद सर्द तो कभी राहत देने वाली सर्दी रहेगी। चक्रवाती स्थितियां मौसम पर प्रतिकूल असर डाल सकती हैं।

अनुसंधान

देश में पहली बार आईसीएमआर से अप्रूव हुई यह रिसर्च, एआई आधारित सिस्टम जयपुर में करेगा वॉइस रिकार्डिंग की जांच

एक मिनट की आवाज से चल जाएगा कैंसर का पता

विकास कुमार, कानपुर

अमृत विचार। देश में पहली बार मुंह, गले और ब्रेन कैंसर की जांच सिर्फ मरीज की आवाज के माध्यम से हो सकेगी। एआई आधारित सिस्टम से ऐसा संभव होगा। इसके लिए मरीज को अस्पताल आने की भी जरूरत नहीं होगी। मरीज चाहे 200 किलोमीटर दूर हो या 500 किलोमीटर दूर, उसको सिर्फ अपनी एक मिनट की रिकार्डेड आवाज गूगल ड्राइव के माध्यम से जीएसवीएम मेडिकल कॉलेज में संबंधित डॉक्टर के मोबाइल पर भेजनी होगी। यहां से आवाज का सैंपल जांच के लिए जयपुर भेजा जाएगा। इसके कुछ समय बाद पता चल जाएगा कि मरीज को कैंसर है या नहीं। यह स्टडी वर्तमान में चल रही है।

जीएसवीएम मेडिकल कॉलेज, कानपुर के हैलट अस्पताल के नाक, कान व गला विभाग में देश की पहली रिसर्च की जा रही है। प्राचार्य प्रो. संजय काला ने बताया कि देश में पहली बार यह रिसर्च आईसीएमआर से अप्रूव हुई है, जिसपर नाक, कान व गला विभाग के डॉक्टरों द्वारा काम किया जा रहा है। आवाज को पूरी तरह डायग्नोस करने के बाद सिस्टम कैंसर और नॉन कैंसर को पूरी तरह स्पष्ट करेगा। एआई एनेबल सिस्टम आवाज की फ्रीक्वेंसी की जांच करेगा और फ्रीक्वेंसी को स्पेट्रम में तोड़कर सभी स्पेट्रम की जांच होगी। कैंसर की जानकारी मिलने पर मरीज का इलाज शुरू किया जाएगा। संबंधित मरीज को कैंसर की आशंका आगे चलकर हो सकती है, यह भी सिस्टम के माध्यम से पता चल सकेगा।

कैंसर की वजह से गड़बड़ाने लगते हैं वोकल कार्ड

हैलट के नाक-कान व गला विभाग में प्रोफेसर डॉ. हरेंद्र कुमार ने बताया कि गले या मुंह में कैंसर होने पर गले में मौजूद वोकल कार्ड (बोलने में सहायक तार) की स्थिति गड़बड़ाने लगती है, जिससे आवाज में बदलाव आने लगता है। मरीज की आवाज को जीएसवीएम मेडिकल कॉलेज से जयपुर मणिपाल यूनिवर्सिटी भेजा जाएगा, वहां पर स्थित आर्टिशियल इंटेलिजेंशन विभाग के प्रो. अभिषेक केसवानी आवाज की जांच करेंगे और कैंसर और नॉन कैंसर की जानकारी देंगे। थायराइड, लकवा, हेड इंजरी व गर्दन की इंजरी व रीढ की हड्डी मे होने वाली समस्या की भी जानकारी इसके माध्यम से पता चल सकेगी।

- जीएसवीएम मेडिकल कॉलेज में मरीजों पर किया जा रहा शोध

35 मरीजों की आवाज जयपुर भेजी गई

नाक-कान व गला विभाग की डॉ. नेहा चौधरी ने बताया कि ओपीडी मे ऐसे कई मरीज आते हैं, जिनको खाना निगलने मे दिक्कत, आवाज मे बदलाव आना व सांस लेने में दिक्कत होती है। यह ध्वनि यंत्र में दिक्कत की वजह से भी होती है। कैंसर के संभावित 35 मरीजों की आवाज जयपुर भेजी गई है, जिनमे 25 पुरुष और 10 महिलाएं शामिल हैं। इनके वॉयस सैंपल पर रिसर्च चल रही है।

अपना कानपुर

हिन्दुस्तान
www.livehindustan.com

महीनों जिस कान दर्द से तड़पे, वह ईगल सिंड्रोम निकला

स्वास्थ्य

आशीष दीक्षित

कानपुर। 32 वर्षीय उर्वा की संतोषी देवी के कान में महीनों से दर्द रहा। [illegible]

- जीएसवीएम, उर्सला व केपीएम की रिपोर्ट में खुलासा, जबड़े की ढाई सेमी लंबी स्टाइलॉयड प्रोसेस हड्डी के बढ़ने से आफत
- ग्लोसोफेरींजल नाम की नस पर स्टाइलॉयड प्रोसेस का दबाव भीषण दर्द की बनता वजह

30 से 60 वर्ष तक की आयु वर्ग के मरीज बीमारी की चपेट में

रही बीमारी ईगल सिंड्रोम से अनजान ये दो मरीज सिर्फ उदाहरण हैं। मेडिकल कॉलेज उर्सला, केपीएम की रिपोर्ट में इस मर्ज के पीड़ितों की बड़ी संख्या में होने का खुलासा हुआ है। अकेले मेडिकल कॉलेज में ही सालभर में 30-60 आयु वर्ग के ईगल सिंड्रोम के लगभग 750 रोगी आए। बीमारी की चपेट में आने वाले अधिकांश ग्रामीण क्षेत्र के हैं। पुरुषों की तुलना में महिला मरीज 60 फीसदी हैं।

कान के पीछे, जबड़े के इर्द-गिर्द के साथ कभी-कभी गर्दन और कंधे तक होने वाली पीड़ा को मामूली तकलीफ समझना बड़ा खतरा बन सकती है। यह सिर्फ कान दर्द नहीं है, बल्कि बगल से निकली करीब ढाई सेमी लंबी स्टाइलॉयड प्रोसेस हड्डी के बढ़ने का नतीजा है। यह हड्डी बढ़कर जबड़े के नीचे से गुजरी ग्लोसोफेरींजल नाम की नस पर दबाव बना रही है। यही दबाव भीषण दर्द की वजह भी है।

सही इलाज न होने से दिव्यांगता का भी खतरा : डॉक्टरों का मानना है कि ईगल सिंड्रोम का इलाज समय पर बेहद जरूरी है। स्टाइलॉयड प्रोसेस हड्डी बढ़ने पर सर्जरी ही एकमात्र निदान है। हड्डी के बढ़े हिस्से को सर्जरी के दौरान काट दिया जाता है। इसके बाद यह अपने पुराने आकार में आ जाती है।

इन लक्षणों व बचाव पर दें ध्यान

- कान या जबड़े के आसपास लगातार या कभी-कभार दर्द रहता हो तो बरतें सावधानी
- चेहरे, गले या पीछे की तरफ गर्दन, कंधे तक तकलीफ हो तो डॉक्टर से संपर्क करें
- कुछ खाने में दिक्कत, गले में खाना अटकने का अहसास हो तो सलाह जरूर लें
- कान में सीटी या कोई आवाज कभी-कभार गूंजने लगती हो तो सतर्क हो जाएं
- बार-बार कान या जबड़े के आसपास दर्द की अनदेखी कतई मत करें
- लंबे समय से दवा खाने के बाद भी राहत न मिलने पर इसकी जांच जरूर कराएं
- ईएनटी विशेषज्ञ से ही इसका इलाज कराएं

"कान के पीछे, जबड़े के इर्द-गिर्द होने वाली पीड़ा को मामूल न समझें। यह ईगल सिंड्रोम भी हो सकता है। इस बीमारी के बारे में कम लोगों को ही पता है। समय पर सर्जरी ही एकमात्र उपाय है। डॉ. आरबी जायसवाल, वरिष्ठ चिकित्सक, केपीएम"

समझना और रोग की सही जानकारी न होना खतरनाक है। ईगल सिंड्रोम के मरीज महीनेभर में 90 से 100 की संख्या में आ रहे हैं। अधिकांश मरीज गांव के हैं। इसमें दवा खाने के बाद भी राहत नहीं मिलती। इलाज में देरी दिव्यांगता के खतरे को बढ़ा सकती है। डॉ. अमृता श्रीवास्तव, [illegible]

सर्द, बिजनौर का दिन सबसे ठंडा, नए विक्षोभ के आने तक चलती रहेगी तेज